हिन्दी का शब्द भण्डार

डॉ. नरेन्द्र सिंह
प्राध्यापक हिन्दी
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

जिस प्रकार भारतीय समाज की संरचना हुई, विभिन्न समयों पर भिन्न-भिन्न जगहों से आयीं भिन्न-भिन्न जातियाँ, संस्कृतियाँ यहाँ आकर अपनी पहचान विलीन कर एकाकार हो गयी उसी तरह इन जातियों की भाषा के शब्द धीरे-धीरे हिन्दी में सम्मिलित हो गये, घुलमिल गये। संस्कृत, प्राकृत, पालि, स्थानीय अपभ्रंश (देशी भाषाएं) दक्षिण तमिल, अरबी-फारसी, यूरोपीय एवं विभिन्न भाषा परिवारों के शब्द हिन्दी में आ गए और उसके अपने हो गए। हिन्दी के इस समृद्ध शब्द भंडार को निम्न शीर्षकों के अंर्तत समझा जा सकता है।

तत्सम -

किसी भी भाषा के वे शब्द जो ज्यों के त्यों हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं। परन्तु हिन्दी में सिर्फ संस्कृत से आये 'ज्यों के त्यों' शब्द तत्सम कहलाते हैं। अन्य विदेशी भाषाओं से 'ज्यों का त्यों' आये शब्द तत्सम नहीं माने जाते उन्हें 'विदेशी शब्दों' की श्रेणी में रखा गया है।

तत्सम शब्द दो प्रकार के हैं पहले परंपरागत, जो कि संस्कृत साहित्य से ज्यों के त्यों ले लिए जाते हैं दूसरे ऐसे तत्सम भी हैं जो संस्कृत के नियमों के आधार पर संस्कृत से ही शब्द लेकर आवश्यकता अनुसार बना लिए जाते हैं।

कुछ तत्सम ऐसे भी हिन्दी में प्रयोग किये जाते हैं जो उच्चारण की अशुद्धता से तत्सम से थोड़े से अलग हो जाते हैं। इन्हें अर्द्धतत्सम कहा जाता है।

तत्सम के उदाहरण -

शरीर के अंग - केश, कर्ण, नेत्र, नासिका, मुख दन्त, जिव्हा, कण्ठ, वक्ष, बाहु, हस्त।

पेड़ पौधों के नाम - आम्र, पलाश, वट, वकुल, शिरीष

पशु - सिंह, गौ, मृग, हस्ति, घोटक, श्वान।

नदियाँ - गंगा, यमुना, नर्मदा, क्षिप्रा।

निर्मित तत्सम -

प्राचार्य, प्रायोजित, गति अवरोधक,लिपिक, कुलसचिव, कुलाधिसचिव, अधिवक्ता, प्राध्यापक, व्याख्याता आदि।

अर्धतत्सम - भगत, रतन, सूरज, अगन, किशन, पूनम, करम आदि।

अन्य भारतीय भाषाओं से आये तत्सम शब्द

(i) पंजाबी - सिक्ख, अकाली, गुरूद्वारा, गुरूमुखी, संगत, लंगर

(ii) गुजराती - ढोकला, खमण, फाफड़ा, गरबा, हड़ताल

(iii) आदिवासी भाषाओं के शब्द - कदली, बाजरा, सरसों, कपास, भिंडी

(iv) दक्षिणी भाषाओं से - चीला, पंडाल, चंदा आदि

इसके अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं के सैकड़ों तत्सम शब्द खोजे जा सकते हैं।

तद्भव -

तत्सम शब्दों के परिवर्तित रूप तद्भव कहलाते हैं, जो संस्कृत से निर्मित या उत्पन्न होते हैं। संस्कृत के अलावा अन्य भाषाओं से हम तत्सम तो ग्रहण कर लेते हैं किन्तु तद्भव हमने सिर्फ संस्कृत से लिये। इसका मुख्य कारण यह है कि अन्य भाषाओं के सिर्फ शब्द से परिचित होते हैं जबकि संस्कृत की पूरी परंपरा से हम परिचित हैं। अतः हिन्दी अपनी शब्द-संपदा के लिए संस्कृत के बहुत करीब है तो संस्कृत का प्रयोग करते समय यदि हम शुद्धता से स्खलित होते हैं तो शुद्ध की जगह अपभ्रंश संस्कृत का प्रयोग करने लगते हैं, यहीं से तद्भव की उत्पत्ति होती है।

उदाहरण - अंधा, अंधेरा, आधा, आग, आँसू, अचरज, उल्लू, ईख, आम, कपूत, काजल, कौआ, गेहूँ आदि।

देशज -

हमारे यहाँ 'लोक' में 'देश' का अर्थ राष्ट्र नहीं होता। बल्कि छोटे-छोटे भूभाग 'देश' कहलाते हैं। पहले के छोटे-छोटे स्थानीय राज्य। 'स्थानीयता' को व्यक्त करने वाली इकाई। अभी भी एक जिले से दूसरे जिले में काम करने जाने वाले मजदूर 'परदेशी' कहलाते हैं। यहाँ तक कि हमारे राष्ट्र के अन्दर 'महाराष्ट्र' भी हो सकता है और सौराष्ट्र भी।

देश का आकार बोली से लेकर विभाषा तक पर निर्भर करता है। बुन्देलखंड, बघेल खंड, महाकौशल, छत्तीसगढ़, ब्रज, अवध, राजस्थान आदि देश हैं और यहाँ बोली जाने वाली बोली या भाषाएँ देशी बोली और देशी भाषाऐं हैं। इन्हें स्थानीय भाषा भी कह सकते हैं। इन में देशी भाषाओं का कोई शब्द जब हिन्दी में आकर प्रयुक्त होता है तो वह देशज शब्द कहलाता है।

देशज शब्दों के हिन्दी भाषा में आने का सबसे प्रमुख कारण इन क्षेत्रों के साहित्यकारों का लेखन जो हिन्दी भाषा में होता है। वे राष्ट्रभाषा हिन्दी में अपने स्थानीय भाषा के शब्दों का प्रयोग करते हैं, अधिकतर जानबूझकर और कभी-कभी अनजाने में। कवि या लेखक अपनी जनपदीय पहचान बनाने के लिए ऐसा करता है।

यह आवश्यक नहीं है कि देशज शब्दों का कोई व्याकरणिक आधार हो। दरअसल देशी भाषाओं का भी स्थिर व्याकरण नहीं होता। देशज शब्दों को 'देसी' नाम से पुकारा जाता है। इन्हें बोलचाल की भाषा के शब्द भी कह सकते हैं। इनके उदाहरण - कच्चा, कटोरा, काका, कुटी, कुप्पी, केतली, चका, चिकना, चूड़ी, झंडा, डंडा, डंका, पंगा, मुण्डा, पापड़, माला, मुकुट, लाठी, लोटा, ऊटपटांग, किलकारी, खटपट, खर्राटा, चरक, चटपटा, चिड़चिड़ा, झंकार, ठठेरा, भोंपू, घुड़की, सनसनाहट,औघड़, ओढ़नी, खलासी, झाड़ी, पाड़ा, पिल्ला, सहेली, कंकड़, काँवड़, चेला आदि।

विदेशी शब्द -

इस समय तो हम 'ग्लोबलाइजेशन' के दौर में हैं, अतः सारी दुनियाँ के जीवंत संपर्क में हैं, जिसमें किसी न किसी देश की भाषा का कोई शब्द अचानक हमसे परिचय करता है और हमारी भाषा में सम्मिलित हो है। ग्लास्तोनोस्त और पेरस्त्रोइका ऐसे ही शब्द हैं।

भारत में आकर बसी विभिन्न जातियों की भाषाओं और उनके शब्दों को छोड़ दें तो ऐसे देश की कभी न कभी हमारे संपर्क में रहे और उनकी भाषा के शब्द हमारी भाषा में शामिल होकर घुलमिल गए। ऐसे में यूनानी, लैटिन, रोमन, चीनी, तुर्की, अरवी, फारसी, ईरानी, पश्तो, जापानी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी, डच, स्पेनिश, जर्मनी, इटली, आदि शामिल है। जिनकी भाषा के कई शब्द हिन्दी भाषा के शब्द हैं और हम उन्हें पहचान भी पाते। अंग्रेजी का उल्लेख इसलिए नहीं किया, क्योंकि उस भाषा के शब्द गिनती के नहीं हैं बल्कि यह भाषा इस 'हावी' हो गई है कि हिन्दी की एक नई ब्रांच 'हिंग्लिश' ही चल निकली है। दाम, दमड़ी, सुरंग, रोमन, अरस्तू, अफलातून, सिकंदर, दीनार जैसे अरवी, पारसी और अंग्रेजी के शब्दों के बिना हमारी हिन्दी बेनूर हैं। इन शब्दों के बाद हमारा परिचय जिन भाषाओं से हुआ वे निम्न हैं -

1. तुर्की - उर्दू, कालीन, कैंची, कुली, कुर्की, चाकू, चम्मच, चकमक, चेचक, तलाश, तोप, दरोगा, बारूद, बेगम, लफंगा, लाश, सराय सुराग आदि।
2. अरवी - अजव, अजीव, अदालत, अक्ल, अल्लाह, असर, आखिर, आदमी, इनाम, उग्र, एहसान, औरत, कमाल, कर्ज, किस्मत, कीमत, किताब, कुरसी, खत, खिदमत, ख्याल, जिस्म, जुलूस, जलसा, जवाब, जहाज, जिक्र, तमाम, तकदीर, तारीख, तरक्की, तकिया, दवा, दावा, दिमाग, दुनिया, नतीजा, नहर, नकल, फकीर, फैसला, वहस, वाकी, मुहावरा, मदद, मजबूर, मुकदमा, मौसम, मौलवी, मुसाफिर, यतीम, राय, लिफाफा, शराव, हक, हजम, हिम्मत, हुक्म, हैजा, हौसला, हकीम, हलवाई आदि।
3. फारसी - आवरू, आतिशवाजी, आफत, आराम, आमदनी, आवारा, आवाज, उम्मीद, उस्ताज, कारीगर, कुश्ती, कूचा, खाक, खुद, खुदा, खामोश, खुराक, गरम, गवाह, राज, गिरतार, गिर्द, गुलाब, चादर, चालाक, चेहरा, जहर, जलसा, जुलूस, जोर, जिन्दगी, जागीर, जादू, जुरमाना, जोश, तबाह, तमाशा, तन्खाह, ताजा, दंगल, दतर, दरवार, दवा, दिल, दीवार, नापसंद, नापाक, पाजामा, परदा, पैदा, पुल, पेश, बारिश, बीमार, बुर्की, मजा, मलाई, मकान, मजदूर, मुश्किल, मोरचा, याद, यार, रंग, राह, लगाम, लेकिन, वापिस, शादी, सिरदार, समोसा, साला, सरकार, हता, हजार आदि।
4. चीनी - लीची, चीनी, चाय
5. जापानी - रिक्शा
6. ईरानी - गज, तीर, मिहिर
7. पश्तो - मटर गश्ती, गुंडा, जमात, डेरा, नगाड़ा, कलूटा, लताड़ आदि।
8. पुर्तगाली - अलमारी, कमीज, तौलिया, कप्तान, गोदाम, नीलम, पादरी, फीता, गमला, संतरा, चाबी।

9. फ्रांसीसी - काजू, कारतूस, कप, कालर, जज, टेबुल, पिकनिक, अंग्रेज

10. डच - बम, तुरूप

11. स्पेनी - कार्क, सिगार

12. रूसी - स्पुतनिक, रूबल, ग्लास्तोनोस्त, पेरेस्त्रोइका

13. जर्मनी - गार्ड, डेक, बेगम

14. इटालियन - लाटरी, राकेट, बायलिन, पिआनो, क्वात्रोच्चि

15. द्रविड - पिल्ला, मीन, पिक, मयूर

16. मुंडा - कोड़ी, गोंड, संथाल

अंग्रेजी के लगभग 12000 शब्द हिन्दी में प्रयोग किये जाते हैं। विदेशी भाषाओं के शब्दों के प्रयोग के साथ-साथ एक प्रवृत्ति और बढ़ी 'संकर' शब्दों की। दो भाषाओं के शब्दों के मेल से नए शब्द का निर्माण।

हिन्दी + फारसी - केडौल, खूनपसीना, कमरुपट्टी, पनीरुपकौड़ा, जेलखाना, सीलबंद।

अरबी + फारसी - तहसीलदार, फिजूलखर्च, अकलमंद, अखबारुनवीस।

अंग्रेजी + हिन्दी - टिकिटघर, रेलगाड़ी, लाठीचार्ज, कपड़ामिल,

सबसे ज्यादा शब्दों का निर्माण अंग्रेजी और हिन्दी के मिलने से हो रहा है।